कचनार की टहनी

चन्द्रसेन 'विराट'

१४७, सोहबतिया बाग, इलाहाबाद—६

प्रथम संस्करण : १९८३

मूल्य : २५·०० रुपये

प्रकाशक : चित्रलेखा प्रकाशन, १४७, सोहबतिया बाग, इलाहाबाद–६
मुद्रक : बोना प्रिंटिंग प्रेस, पीली कोठी, कीडगंज, इलाहाबाद–३

उसे

जो आया

किन्तु

ठहरा नहीं

क्रम

कचनार की टहनी

झुकी मन के गवाक्षों पर किसी कचनार की टहनी
हमारे द्वार तक आयी किसी के द्वार की टहनी

लदी जब लाल फूलों से बुलाने लग गई मुझको
कटीले तार की दीवार की उस पार की टहनी

इधर का मोगरा करता निवेदित गीत गंधों के
उधर की रात्रि-गंधा की झुकी वय भार की टहनी

समझकर भी नहीं समझे हमें संकेत जो करती
पड़ौसी के अहाते की शोख गुलनार की टहनी

बहुत चाहा कि हम भी तोड़ लें कुछ फूल छुगनी के
नहीं झुकती झुकाये पर सबल संस्कार की टहनी

सुबह से शाम तक लड़कर थके जब बाग में लौटे
किसी की बाँह सी लिपटी किसी के प्यार की टहनी

मुझे संजीवनी देती सुबह मैं युद्ध में लौटूँ
प्रणय-स्वीकार में हिलती किसी अभिसार की टहनी

■

दर्द जागृत हुआ

प्राण में दर्द जागृत हुआ
गीत फूटा उपकृत हुआ

शब्द स्वयमेव आते गये
छंद पर छंद निसृत हुआ

अनुभवों के क्षितिज जब छुए
दृष्टि का कोण विस्तृत हुआ

स्नेह का स्निग्ध संदर्भ था
आपका नाम उद्धृत हुआ

आप ही बस स्मरण रह गये
शेष संसार विस्मृत हुआ

साँस जलती शिखा दीप की
आयु का काल ही घृत हुआ

जब विवेकी विनय जी उठी
हर अहंकार तब मृत हुआ

आपने स्वर दिया बस तभी
गीत मेरा बहुश्रुत हुआ

□

रोते हुए गाना पड़ा

हर दशा में महफिलों का हृदय बहलाना पड़ा
रो पड़े हँसते हुए, रोते हुए गाना पड़ा

मंच की हर नाटिका जारी रहे बस इसलिये
नायकों से विदूषक तक पात्र अपनाना पड़ा

जो सही है शक्ल वह जाहिर न होने दी कभी
हर मुखौटा वक्त के अनुकूल बनवाना पड़ा

हम मदारी बन गये तो साथ का बन्दर हमें
जिस तरह बाजा बजा उस तरह नचवाना पड़ा

आपने देखा कि हमको योग्य अवसर देखकर
धार से कटना पड़ा है और जुड़ जाना पड़ा

होश आ पाये न गाफिल कौम को पाँचों बरस
कुछ नये नारे मिलाकर जाम पिलवाना पड़ा

आम जो भी आदमी था ठीक उसके पेट पर
आत्म-विज्ञापन हमें भी एक चिपकाना पड़ा

देश को ऊँचा उठाने के लिए होकर विवश
नीति के स्तर पर हमें खुद आप गिर जाना पड़ा

□

गीत तब गाया गया

घाव को जब भी पकाकर दर्द गहराया गया
आँख गीली कर सके वह गीत तब गाया गया

अश्रु से धोकर सुगंधित स्वप्न जब छिड़के गये
तब कहीं जाकर हृदय का घाव महकाया गया

काँच की गुड़िया न पाकर रूठ बैठा बालपन
अन्य फिर कोई खिलौने से न बहलाया गया

दर्द को करुणार्द्र स्वर में जब किया अभिव्यक्त तो
पत्थरों की आँख तक से अश्रु छलकाया गया

प्यार के अन्याय सारे उफ किये बिन सह लिये
एक भी प्रतिवाद ओठों पर नहीं लाया गया

डर गये संसार से विद्रोह कर पाये न तुम
अन्यथा कुरता लहू से क्यों न रंगवाया गया

दर्द का संदर्भ ही हमने दिया कुछ इस तरह
हर किसी द्वारा पुराना जख्म सहलाया गया

रूप का आतिथ्य पाने का मुझे अधिकार है
मैं नहीं आया स्वयं ही बल्कि बुलवाया गया

मैं वही कवि हूँ कि जिसकी सुख चुराने के लिये
जब तलाशी ली गई है दर्द ही पाया गया

□

सोने न दिया मुझको

दु:ख को दुश्चिन्ता ने सोने न दिया मुझको
सुख के सपनों में भी खोने न दिया मुझको

मैं किसका हो पाता ? मेरे अभिमानों ने
जग का क्या अपना भी होने न दिया मुझको

नकली मुसकानों से सिसकियाँ छिपाये था
आडम्बर ने खुलकर रोने न दिया मुझको

स्वीकार करो न करो दुविधा ने माला में
अपने मन का मोती पोने न दिया मुझको

भावुकता ने चाहा गीतों का बीज मगर
कुंठाओं ने मन में बोने न दिया मुझको

निष्ठुर व्यवहारिकता ने वर्जित रखा हृदय
सम्बन्धों का बोझा ढोने न दिया मुझको

आँसू से भीगा था अतिक्रमित अहम् वाला
रुमाल चाँदनी में धोने न दिया मुझको

□

चरित्र नहीं है

हो सम्पन्न शहर पर दुःख है उसका शुद्ध चरित्र नहीं है
और भले सब कुछ हो लेकिन वातावरण पवित्र नहीं है

कृत्रिम संवेदन है सारे छली औपचारिकता केवल
तात्कालिक सहयात्री भर हैं कोई सच्च मित्र नहीं

सुख सुविधा भोगों के पीछे आँसू चीखें आह करा
फ्रेम काँच कीमती भले हों लेकिन उजला चित्र नहीं

भोग रहे वनवास शहर में तुम भी राम नहीं हो यदि तो
पत्नी भी सीता न तुम्हारी और अनुज सौमित्र नहीं है

मरे हुए सम्बन्धों के शव फैलाते दुर्गन्ध सड़क पर
उसे दबा दे ऐसा कोई प्राप्य आधुनिक इत्र नहीं है

नगर-वधू सभ्यता विरासत में क्या सिवा कोढ़ के देती
अच्छा है इस वंशवृक्ष में दुहिता है दोहित्र नहीं है

काफी हाउस से संसद तक एक दिमागी अय्याशी है
मेरा देश अजायबघर-सा क्या है जो कि विचित्र नहीं है

□

उछाला जा रहा है

खींचकर मतलब निकाला जा रहा है
व्यर्थ ही प्रकरण उछाला जा रहा है

मूल मुद्दों से हटाकर ध्यान सबका
बहस में हर तथ्य टाला जा रहा है

सत्य पर परतें चढ़ाकर संभ्रमों की
झूठ के अनुरूप ढाला जा रहा है

पक्ष में निर्णय लगाने के लिये ही
कुर्सियों पर ज़ोर डाला जा रहा है

यह दुरागृह देखिये बासी कढ़ी को
छोंक देकर फिर उबाला जा रहा है

दूसरे के दाग देखे जबकि खुद के
पैर के नीचे पनाला जा रहा है

आदमी को पतित कर दे गुह्य मन में
वह घृणित संदेह पाला जा रहा है

जो गिरे हैं और उनको रौंद डाला
स्थापितों को ही सँभाला जा रहा है

नाचघर निर्माण की परियोजना में
ध्वंस होने को शिवाला जा रहा है

रोशनी के स्त्रोत की चिन्ता करो तुम
आ रहा है तम, उजाला जा रहा है

□

जेठ की दोपहर

तप रहा है शहर
जेठ की दोपहर

खौलते सूर्य को
हर किरन है कहर

सर्पिणो [illegible] लिये
है लहर पर लहर

ये सुलगती सड़क
कोलतारी नहर

यह उमस ऊब का
चढ़ रहा है जहर

रात भी तप्त थी
कुनकुनी है सहर

तंग है काफिये
और छोटी बहर

कुंतलों की कहाँ
छाँव, जायें ठहर

याद से मन हुआ
गुलमुहर, गुलमुहर

□

महावर नहीं मिला

मेंहदी नहीं मिली है महावर नहीं मिला
इच्छा की हर वधु को यहाँ वर नहीं मिला

यह बात नहीं है कि वे सुयोग्य नहीं थे
सच पूछिये तो उनको अवसर नहीं मिला

प्रतिमाएँ कुछ न स्थापित पर पूज्य हैं सदा
संयोग है कि उनको मंदिर नहीं मिला

सशरीर इस धरा पर अब तक की खोज में
इन्सान के अलावा ईश्वर नहीं मिला

भावों भरे मधुर हैं पर नियति देखिये
गीतों में कुछ अभागों को स्वर नहीं मिला

जब भी कला बिकी है बस पेट के लिये
रोटी मिली जरूर पर आदर नहीं मिला

निकले हैं घर से अक्सर अपनी तलाश में
लौटे तो हमको अपना ही घर नहीं मिला

हिन्दी ग़ज़ल तो और भी लिक्खी गई बहुत
लेकिन, 'विराट' जैसा तेवर नहीं मिला

□

बात न होने पाये

हमने चाहा कि मुलाकात न होने पाये
मिल भी जायें तो कभी बात न होने पाये

देख पायेंगे पराजित न कभी भी तुमको
शह जो लगती है लगे मात न होने पाये

भीग जाओ न कहीं आज बहुत भीतर तक
इसलिये आँख से बरसात न होने पाये

मौन इस मन में तुम्हारे लिये रहा है कुछ
उम्र भर तुमको कभी ज्ञात न होने पाये

चोट तन की तो सहन कर भी सकोगे लेकिन
मन पे हलका-सा भी आघात न होने पाये

फेंकना दिल का महज खेल है हम भी खेले
तुम सरीखे मगर निष्णात न होने पाये

लाख कोशिश भी करो किन्तु कभी भी तुमसे
प्यार के दर्द का आयात न होने पाये

और भी हिन्दी ग़ज़ल लिख रहे 'विराट' मगर
आपकी भाँति वे विख्यात न होने पाये

□

नाम अर्जित किया

गीत में नाम अर्जित किया
वह तुम्हें ही समर्पित किया

प्राण का रक्त चंदन लगा
गीत का भाल चर्चित किया

जो हृदय ने कहा वह सभी
बुद्धि ने भी समर्थित किया

सत्य सौन्दर्य शिव तत्व का
स्वस्थ मानक विनिर्मित किया

देह का धर्म है वासना
प्रेम में किन्तु वर्जित किया

दीर्घ लंबित जनम मृत्यु का
वक्त ने वाद निर्णित किया

दंभ वजनी हुआ था उसे
विनय-जल में विसर्जित किया

मन हुआ था विरागी उसे
प्यार में फिर प्रवर्तित किया

□

उतना विशिष्ठ है

जितना सहज सरल है उतना विशिष्ठ है
मेरे लिये तो ऐसा ही गीत इष्ठ है

सच्चे विशुद्ध गीत का मौलिक स्वभाव ही
संवेदना सहित है, अनुभूति - निष्ठ है

स्वर की कमान पर है यह बाण शब्द का
भावुक हृदय के भीतर सीधा प्रविष्ठ है

कवि - कर्म सृजनधर्मी निर्माण ब्रह्म का
अत्यन्त सरल होकर अत्यन्त क्लिष्ठ है

संस्कार शून्य मेधा व्यायाम यदि करे
शब्दों के साथ अर्थों का भी अनिष्ठ है

निर्माण नायकों का हर काल में किया
नर, राम है अगर तो कवि ही वशिष्ठ है

कवि का न कद उमर से नापा गया कभी
जितना बड़ा हो दर्द वो उतना वरिष्ठ है

□

रसवन्त हो गये

जब काव्य कामिनी के कवि कंत हो गये
रसहीन पल उमर के रसवन्त हो गये

वैशाख वसन्तों में रुपांतरित हुए
जलते हुए मरुस्थल मधुवन्त हो गये

हम तो सगुण उपासक उस रूप के रहे
गुणहीन जन्म के थे गुणवन्त हो गये

यह प्यार अयाचित ही जब मिल गया हमें
श्रीहत रहे जनम से श्रीमंत हो गये

मरती जिजीविषा को संजीवनी मिली
शव स्वप्न के हमारे जीवंत हो गये

निश्चित कफन बने वह आँचल मिला हमें
हम मौत की तरफ से निश्चिन्त हो गये

पद से जुड़े मगर हम अज्ञात ही रहे
गीतों ग़जल से जुड़कर यशवन्त हो गये

अपनी जगह हमीं हैं बिलकुल विशिष्टतम
माना कि इस विधा में दुष्यंत हो गये

□

शेष कुशल है

मुझको हड्डी का बुखार है शेष कुशल है
पत्नी यक्ष्मा का शिकार है शेष कुशल है

उदर बढ़ा जाता बच्चे का बदन सूखता
उसको यकृत का विकार है शेष कुशल है

अम्मा को चश्मा बनवाना था, बापू का
कुरता बिलकुल तार तार है शेष कुशल है

तीन माह का चढ़ा किराया औ बनिये का
वेतन से ज्यादा उधार है शेष कुशल है

परसों तंगी से तंग आकर अपना प्यारा
बेच दिया मैंने सितार है शेष कुशल है

कल छंटनी का नोटिस मुझको प्राप्त हो गया
गिरा नौकरी पर तुषार है शेष कुशल है

मैं छू दूँ तो सोना मिट्टी हो जाता है
जाने कैसा शनि सवार है शेष कुशल है

कम लिक्खा है अधिक समझना मित्र आज तो
आत्मघात का ही विचार है शेष कुशल है

□

आश्वस्त नहीं है

हृदय अभी आश्वस्त नहीं है
संभावना निरस्त नहीं है

चिन्ता करें न, परिवादों के
हम बिलकुल अभ्यस्त नहीं है

हम अपना क्या रोना रोयें
कौन यहाँ संत्रस्त नहीं है

कैसे कहें दर्द का चाकू
पसली में पैबस्त नहीं है

अभी युद्धरत हैं संकट से
धैर्य हमारा ध्वस्त नहीं है

पीड़ा का सागर पी डालें
कोई कहीं अगस्त्य नहीं है

मौत सुनिश्चित पर जीवन का
अभी हौसला पस्त नहीं है

डूब गये सब किन्तु अभी भी
एक सितारा अस्त नहीं है

तुम्हें याद भी नहीं कर सकें
हम इतने तो व्यस्त नहीं है

□

अनुरक्त हो गये

आपत्ति है कि हम क्यों अनुरक्त हो गये
इस भाँति रूप के क्यों हम भक्त हो गये

यह सुन रखा कपोल किसी रूप के कहीं
बस नाम सुन हमारा आरक्त हो गये

जब प्यार ऊर्ध्वचेता हो भक्ति बन गया
हम आत्मा से उस पर आसक्त हो गये

अति मानसी जगत में हम तो प्रविष्ठ हैं
जग से भले तुम्हारे परित्यक्त हो गये

वह प्यार रक्त में तो था ही घुला हुआ
हम आँसुओं में घुलकर संपृक्त हो गये

वह शक्ति शब्द को दी है प्यार ने सहज
सब कथ्य गूढ़तम भी अभिव्यक्त हो गये

□

किशोर हो गई

कोई कली बाग में किशोर हो गई
हमारे कलेजे की कोर हो गई

चौंक उठे फूल तो जलीं अन्य कलियाँ
क्यारी क्यारी देख के विभोर हो गई

सुषुमा के सागर में ज्वार उठा ऐसा
दर्शक के हियों की हिलोर हो गई

आते जाते सबने निहारा जी भर के
नाचता मुंडेरों का मोर हो गई

खुली आँखों उसके सपन हमने देखे
आँखों ही आँखों में भोर हो गई

चिनगारी चुनती है एक टक निहार कर
चेतना दृगों की चकोर हो गई

सौन्दर्य की साहूकारिन है फिर भी
आदत से हृदयों की चोर हो गई

पहरेदारी काँटों की, प त्तों की सुरक्षा
भँवरों के मन की मरोर हो गई

सौन्दर्य के संग सुहानी है सरल भी
कहा किसने जिन्दगी कठोर हो गई

□

स्मरण हुआ है

साँझ हुई तो स्मरण हुआ है
बोझिल वातावरण हुआ है

दिन भर भीड़ रही अब दु:ख का
एकांतिक आक्रमण हुआ है

एक अनिर्वचनीय उदासी
पीड़ा का परिग्रहण हुआ है

प्राणों के गौतम का जैसे
निज घर से निष्क्रमण हुआ है

घनीभूत दर्दों का दंशन
बिना मौत के मरण हुआ है

स्मृतियों के असमाप्त कोष से
आँसू का आहरण हुआ है

पुनः सदा की भाँति नींद का
आवर्तित अपहरण हुआ है

त्वरित प्रकरणों में अपना भी
यम से पंजीकरण हुआ है

नहीं वारुणी, विष ही दे दे
जग क्यों इतना कृपण हुआ है

□

झील की तरह

हम कैद हैं पहाड़ों में झील की तरह
बुझने को हैं भभककर कंदील की तरह

भूखे को बासी रोटियों से स्वप्न थे मिले
दुर्भाग्य ने झपट लिये हैं चील की तरह

हम दो तटों से तरसे पर कौन हैं यहाँ
जो सेतुबंध करता नल नील की तरह

जिसके धनुष्य बाण तक भी छीन ले पुलिस
हम हैं लुटे लुटे से उस भील की तरह

मंजिल का पता पूछकर हमको भुला दिया
हम मोड़ पर खड़े हैं किसी भील की तरह

विस्मृत, उपेक्षित से जीते हैं जिन्दगी
अपने जिले से खारिज तहसील की तरह

बिखरे हुए पड़े हैं बिलकुल उजाड़ से
सरकारी दफ्तरों में तातील की तरह

हमको किसी ने क्रूरता से ठोंक दिया है
दरवेश की हथेली में कील की तरह

□

कुछ नये दोस्त

कुछ नये दोस्त बनाये हमने
पेड़ काँटों के लगाये हमने

अब जरूरी है हादसे होंगे
सुप्त कुछ प्रेत जगाये हमने

जानते थे कि डसेंगे फिर भी
आस्तीनों में बसाये हमने

देख पाते न शकल वे अपनी
उनको दर्पण न दिखाये हमने

नोच सकते थे मुखौटे उनके
पर न नाखून बढ़ाये हमने

रीढ़ ही टूट गई है अपनी
कुछ वजन ऐसे उठाये हमने

कुछ जनाजे जवान सपनों के
अपने हाथों से सजाये हमने

आप अपने मजार पर अक्सर
अश्रु के दीप जलाये हमने

□

क्या कहते हो

आज देश अस्वस्थ-गात है क्या कहते हो
कफ है तीखा पित्त, वात है क्या कहते हो

ये विक्षिप्त क्रियाएँ, विकृतियाँ मर्कट सी
राजनीति को सन्निपात है क्या कहते हो

प्रेत जागकर उठे देश में देवशयन की
घोर अमावस कालरात है क्या कहते हो

यह शतरंज वजीरों वाली, राजा विस्मृत
आसन की शह और मात है क्या कहते हो

थूहर के फूलों को पाने की स्पृधा में
रौंद रहे वे पारिजात हैं क्या कहते हो

वे कहकहे लगाते हैं जब जन साधारण
निज आँसू में सद्यस्नात हैं क्या कहते हो

वट वृक्षों को मिली सुरक्षा वे क्यों सोचें
दूर्वादल पर वज्रपात है क्या कहते हो

उगने वाला सूर्य साँवला है तो निश्चित
होने को काला प्रभात है क्या कहते हो

□

कहाँ हो

आवाज आ रही है कलाकार कहाँ हो
ओ लेखिनी, ओ तूलिका, सितार कहाँ हो

यह मंच बिखरता ही जा रहा है संभालो
नाटक के ओ समर्थ सूत्रधार कहाँ हो

अब राजनीति शब्द का ही अर्थ खो गया
ओ नीति के प्रबुद्ध भाष्यकार कहाँ हो

संभव दिशा का दान तो साहित्य ही से है
ऐसे में आजयुग के कलमकार कहाँ हो

संस्कार-शून्यता बनी सोपान से स्खलन
संस्कार के ओ सिद्ध ऋचाकार कहाँ हो

आकार में विकार आ गया मनुष्य के
ओ मनु मनुष्यता के मूर्तिकार कहाँ हो

आलोक मर गया है अंधेरा ही अंधेरा
तब ओ समय के सूर्य किरणकार कहाँ हो

वल्गा सँभालिये कि रथी भूल रहा पथ
जन-पार्थ के ओ सारथी अवतार कहाँ हो

□

नहीं हुआ कबसे

रूप-दर्शन नहीं हुआ कब से
गीत-लेखन नहीं हुआ कब से

तुम न सावन की घटा सी घुमड़ीं
स्नेह-सिंचन नहीं हुआ कब से

फूल के बाण न मारे तुमने
मर्म-भेदन नहीं हुआ कब से

स्पर्श पारस न तुम्हारा पाया
लौह कंचन नहीं हुआ कब से

हो गया अन्तराल ओंठ जले
चारु चुंबन नहीं हुआ कब से

आँख से चू न पड़ा गंगाजल
ईश - अर्चन नहीं हुआ कब से

प्यार पाया नहीं तो जीवन का
पाप पावन नहीं हुआ कब से

राधिका तुम नहीं हुई हो तो
प्राण मोहन नहीं हुआ कब से

छेड़िये मुक्तिका 'विराट' मधुर
रस-निमज्जन नहीं हुआ कब से

□

आसपास रहने दे

अश्रु के आस पास रहने दे
छोड़ मुझको उदास रहने दे

जिन्दगी मत दिला नई उम्मीद
मुझको यूं ही निराश रहने दे

मय नहीं है न सही पर संमुख
एक खाली गिलास रहने दे

हो सके छोड़ अकेला मुझको
बंद कमरा निवास रहने दे

देख मेरा नशा नहीं टूटे
होश को बदहवास रहने दे

छोड़ दे यश न मुझे पहचाने
खूब सादा लिवास रहने दे

बेच सब, शेष गीत ग़ज़लों की
पुस्तकें खास-खास रहने दे

ज़िद न कर चन्द्रमुखी ! पारो का
तू मुझे देवदास रहने दे

□

सयानी हो गई

प्रीत अब अपनी सयानी हो गई
बात बढ़ चढ़ कर कहानी हो गई

जो कभी सुख-चैन की नगरी रही
अब दुखों की राजधानी हो गई

हो गये हैं स्वप्न बैरागी सभी
और सन्यासिन जवानी हो गई

गीत से इनकार पाकर भावना
कच प्रताड़ित देवयानी हो गई

कौन घायल है कि घायल की सुने
ठीक ही मीरा 'दिवानी' हो गई

ठीक दुपहर देखकर निज छाँव भी
थी कभी अपनी, बिरानी हो गई

कुछ पुराने घाव के मुँह खुल गये
दोस्तों की महरबानी हो गई

भूख के कारण हुआ यह हादसा
क्रान्तियों की आग, पानी हो गई

एक गाता कंठ, इक दुखता हृदय
ये उमर भर की निशानी हो गई

□

होना चाहिए

हर नियम का एक तो अपवाद होना चाहिए
प्यार है तो कुछ न कुछ परिवाद होना चाहिए

वासना से प्यार का अन्तर समझने के लिये
आत्मा से देह का संवाद होना चाहिए

गा उठे प्रतिमा स्वयं ही इस तरह आवाज दे
प्यार के हर बोल का प्रतिनाद होना चाहिए

प्यार करता व्यक्ति को स्थितप्रज्ञ जीवन में उसे
आँसुओं में भी वही आल्हाद होना चाहिए

यंत्र-युग में मन अभी भी एक निर्जन द्वीप है
गीत को कुछ बस्तियाँ आबाद होना चाहिए

आदमी के भाग्य को पुरुषार्थ का वह बल मिले
हर सपन का सत्य में अनुवाद होना चाहिए

साध्य खुद आकर मिलेगा आपसे पर शर्त है
साध्य के प्रति साध का उन्माद होना चाहिए

स्वाद पूरा तो सुखों का आ सकेगा बस तभी
कहकहों में सम्मिलित अवसाद होना चाहिए

बाहरी क्या भीतरी भी कैद से वह मुक्त हो
एक कवि को हर तरह आजाद होना चाहिए

□

कहीं तो छन्द रहने दो

नयन में अश्रु होठों पर जरा आनन्द रहने दो
हुआ है गद्यमय जीवन कहीं तो छन्द रहने दो

शहर में एक तो दर्पण रखो सच बोलता हो जो
जरूरी है कि शायर को सदा स्वच्छन्द रहने दो

यहाँ सामान्य जन जो है चतुर वह हो नहीं जाये
सियासत चाहती है ये उसे मतिमन्द रहने दो

रखो विद्रोह को गाफिल नशा तारी रखो उस पर
यही निर्देश सत्ता का उसे निस्पन्द रहने दो

शरम आये कभी शायद हमारे सांस्कृतिक मन को
बदन पर शील के यूंही लगे पैबन्द रहने दो

लगाओ सेंध पीछे से दिखाने के लिये लेकिन
सामने द्वार पर पहरा चाक-चौबन्द रहने दो

व्यवस्था में घुसे हैं जो उन्हीं का हुक्म है ऐसा
सफलता तक पहुँचती हो गली वह वन्द रहने दो

सृजनरत हम, न रचना से हमारे ध्यान को खींचो
घसीटो मत विवादों में हमें निर्द्वन्द्व रहने दो

□

गजल कह रहा हूँ मैं

होने लगी है शाम ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं
हाथों में नहीं जाम ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं

यह काव्य का स्फुरण है मेरी बिना पिये
आँखें हुई ललाम ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं

अनुभूति ज़रा आना संवेदना सहित
ले दर्द कलम थाम ग़ज़ल कह रहा हूँ मैं

इस क्षण न मैं स्वयं का मेरा न शेष कुछ
संज्ञा न सर्वनाम गजल कह रहा हूँ मैं

देवत्व से वरीय सदा ओ मनुष्यता
स्वीकार कर प्रणाम गजल कह रहा हूँ मैं

संघर्षरत अभी भी जग के असत्य से
हारा न सत्यकाम गजल कह रहा हूँ मैं

मेरे लिये सिसककर सोया सुबह-सुबह
कोई कहीं अनाम गजल कह रहा हूँ मैं

अनुमति तुझे कि थमकर अपनी थकन भुला
ऐ, वक्त ले विराम गजल कह रहा हूँ मैं

□

ठहराव आ गया

पानी में ठहराव आ गया
काई का फैलाव आ गया

मुख्य धार से कटकर जल की
क्षमता घटी, अभाव आ गया

आहत समग्रता होते ही
अंगों में बिखराव आ गया

आपस में विश्वास घटा तो
हृदयों में अलगाव आ गया

चिनगारी फूटी तो बाहर
भीतर का टकराव आ गया

रातों रात मुखौटे बदले
झण्डों में बदलाव आ गया

बंधी मुट्ठियाँ खुलीं, रीढ़ में
मुजरेनुमा झुकाव आ गया

आम आदमी देख रहा है
नारों में दुहराव आ गया

जाते ही रोशनी शहर को
गलियों में भटकाव आ गया

□

प्रबल सम्भावनाएँ हैं

नदी में बाढ़ आने की प्रबल सम्भावनाएँ हैं
तटों को लील जाने की प्रबल सम्भावनाएँ हैं

सपन का जो शहर तुमने बसाया है कछारों में
समूचा डूब जाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

तुम्हारा यह घिसा चेहरा तुम्हारे दोस्तों द्वारा
नहीं पहचान पाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

चटानों का नगर इसमें चले हो हाथ में लेकर
आईना टूट जाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

तुम्हारे पथ-प्रदर्शक से तुम्हें आगाह करता हूँ
कारवाँ लूट जाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

शहर जंगल इमारत के, यहाँ है भेड़िये बचना
कभी भी फाड़ खाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

लगाया दुश्मनों पर जो पलट कर आज तुम पर ही
वही आरोप आने की प्रबल संभावनाएँ हैं

बनाया द्वीप की खातिर उसी के वासियों द्वारा
सेतु वह टूट जाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

व्यवस्था जय-जुलूसों की पूर्व से कर रहे हो पर
तुम्हारे हार जाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

सुनें कल आदमी के दर्द के दरबार में आकर
हमारे ग़ज़ल गाने की प्रबल संभावनाएँ हैं

□

सुलभ हो जाये

चाँदनी रात सुलभ हो जाये
रूप का साथ सुलभ हो जाये

दृष्टि मिलते ही दृगों में दोनों
प्रेम - प्रणिपात सुलभ हो जाये

दूध झरता हो गौर मुखड़े पर
दृश्य अवदात सुलभ हो जाये

जो न बरसों की तपस्या से मिला
वह अकस्मात सुलभ हो जाये

जिन्दगी की तमाम बातों में
प्यार की बात सुलभ हो जाये

जीत जायेंगे, रूप के हाथों
शह लगे, मात सुलभ हो जाये

हम हैं संतुष्ठ प्यार का हमको
फूल क्या पात सुलभ हो जाये

दर्द आयात करे मन इतना
गीत - निर्यात सुलभ हो जाये

व्यर्थ है स्वर्ग भी अगर हमको
मृत्यु पश्चात सुलभ हो जाये

□

डर लगता है

छद्म भगवान से डर लगता है
उसके वरदान से डर लगता है

कौन सा मूल्य वसूले न पता
उसके अहसान से डर लगता है

जिसका हँसना भी राजनैतिक हो
उसकी मुसकान से डर लगता है

लोग पहना न दें काँटों का मुकुट
मान संमान से डर लगता है

मेरे चेहरे से न नोचो चेहरा
अपनी पहचान से डर लगता है

सिर्फ कंकरीट का जंगल है शहर
इस बियाबान से डर लगता है

लूट लेते हैं परायी श्री को
अब तो श्रीमान से डर लगता है

इतना आतंक बंद कमरों को
घर के दालान से डर लगता है

सोख ले रस न कलाओं का कहीं
शुष्क विज्ञान से डर लगता है

□

सरकार के सरकार

इन दिनों सरकार के सरकार हैं
वे हमारे यार के भी यार हैं

मंदिरों में तो नहीं स्थापित मगर
देवताओं से बड़े करतार हैं

जो उठाकर साथ जूते चल रहे
वे नहीं कोई सिपहसालार हैं

कर वसूलो से बचा कोई कहाँ
नुक्कड़ों पर क्रूर नाकेदार हैं

कुछ कटे हाथों, जुबानों, शीश की
आफिसों के द्वार बंदनवार हैं

गीदड़ों से गिद्ध बोले दोस्तों—
हड्डियों के कौन दावेदार हैं

बाज को इसका बड़ा अफसोस है
खास पंछी इन दिनों बीमार हैं

आप अपने से शुरू गिनती करें
मुल्क में कितने कहाँ मक्कार हैं

□

मैं जानता नहीं

कैसे कहूँ कि उसको मैं जानता नहीं
मैं जानता हूँ लेकिन पहचानता नही

मुझसे बगैर पूछे वो मुझमें बस गया
फिर क्यों न द्वंद्व उससे मैं ठानता नहीं

उसके बयान सारे मेरे विरुद्ध हैं
तुम शत्रु मानते हो मैं मानता नहीं

तुम कह रहे हो मेरा वह खून कर न दे
खतरे को मैं स्वयं क्यों अनुमानता नहीं

छाने बगैर लोहू को लोग पी गये
मैं अश्रु पी रहा हूँ तो छानता नहीं

मेरा अहम् है वह तो मेरा ही आत्मज
अपना धनुष स्वयं पर मैं तानता नहीं

□

दूकान चलाये रखिये

जुड़ गई भीड़ जुड़ाये रखिये
अपनी दूकान चलाये रखिये

मौके मौके के मुखौटे पहनें
मूल चेहरे को छुपाये रखिये

आपसे ध्यान न लोगों का हटे
डुगडुगी तेज बजाये रखिये

टाईवालों में पृथक दिखने को
अपनी कालर को उठाये रखिये

आधुनिक हैं तो निजी बेठक में
एक कैक्टस को सजाये रखिये

खास मोहरों से जुड़ सियासत की
एक शतरंज बिछाये रखिये

आम इन्सान से बचने के लिये
दर पे दरबान बिठाये रखिये

जाग जाये नहीं जमीर कहीं
उसको नशे में सुलाये रखिये

□

एक ही गीत सुनायें

एक ही स्वप्न सजायें काफी
एक हो राह बनायें काफी

जंग जारी रखें अँधेरे से
एक ही दीप जलायें, काफी

सारा माहौल हो अगीत जहाँ
एक ही गीत सुनायें, काफी

सारी रचना में महक आयेगी
एक ही दर्द बसायें, काफी

जिन्दगी भर का ठिकाना होगा
एक ही दिल में समायें, काफी

आदमी खो गया, सुन ले शायद
एक आवाज लगायें, काफी

वक्त पर शोला बनाने के लिये
एक चिनगारी बचायें, काफी

बोल उट्ठेगी मूर्ति श्रद्धा से
एक ही फूल चढ़ायें, काफी

जाग उट्ठेगी बस्तियाँ सारी
एक इंसान जगायें, काफी

यातना-शिविर

धरती है मूक सारी आकाश है बधिर
ये जिन्दगी है मेरी या यातना-शिविर

उस ठौर कैद हूँ मैं जब प्यास के लिये
पीना पड़ा है अक्सर मेरा मुझे रुधिर

मैं मर रहा हूँ क्षण-क्षण वह मंद विष दिया
मुझको निगल रहा है कोई तरल तिमिर

अनुभूतियाँ है बर्फिल, हर सोच जम गया
बेलोच रीढ़ मेरी भीतर धँसा शिशिर

सुकुमार स्वप्न सड़कों पर कत्ल कर दिये
शवदाह स्थल बना है ये आँख का अजिर

कैसा विषम विपर्यय, सब कुछ विलोम है
हर धन हुआ ऋणात्मक, रौरव हुआ रुचिर

झपकी नहीं पलक तक वे रतजगे किये
उदयास्त भूल बैठा मेरे लिये मिहिर

□

सोचो

हवा विपरीत है, सोचो
नाव भयभीत है, सोचो

दिशाओं में सुबह से ही
करुण संगीत है, सोचो

क्रोध तूफान का सचमुच
वर्णनातीत है, सोचो

प्रमुख मल्लाह दुश्मन का
दास है, क्रीत है, सोचो

किसलिये आज भीतर की
आग पर शीत है, सोचो

द्रोपदी हार जाओगे
शकुनि की जीत है, सोचो

वासना के वसन पहने
किसी की प्रीत है, सोचो

खेद मुजरों की महफिल में
आजकल गीत है, सोचो

□

असम्भव तो नहीं

सूर्य का रूप भी काला हो असंभव तो नहीं
रात के घर में उजाला हो असंभव तो नहीं

एक दीपक है न बुझता है बुझे दीप कई
उसको तूफान ने पाला हो असंभव तो नहीं

नाव जिसको कि समंदर ने निगलना चाहा
उसको लहरों ने उछाला हो असंभव तो नहीं

प्रमुख मल्लाह दुश्मन का
दास है, क्रीत है, सोचो

किसलिये आज भीतर की
आग पर शीत है, सोचो

द्रोपदी हार जाओगे
शकुनि की जीत है, सोचो

वासना के वसन पहने
किसी की प्रीत है, सोचो

खेद मुजरों की महफिल में
आजकल गीत है, सोचो

□

असम्भव तो नहीं

सूर्य का रूप भी काला हो असंभव तो नहीं
रात के घर में उजाला हो असंभव तो नहीं

एक दीपक है न बुझता है बुझे दीप कई
उसको तूफान ने पाला हो असंभव तो नहीं

नाव जिसको कि समंदर ने निगलना चाहा
उसको लहरों ने उछाला हो असंभव तो नहीं

राह में जिसको गिराया था सहारों ने कभी
उसको ठोकर ने संभाला हो असंभव तो नहीं

यह भी होता है जिन्दगी के लिये जाम कभी
मौत ने हाथ से ढाला हो असंभव तो नहीं

जो स्वयंवर में निमंत्रित न हुआ हो फिर भी
उसी के कंठ में माला हो असंभव तो नहीं

मेरे तलुवों में चुभा शूल किसी स्नेही ने
अपनी पलकों से निकाला हो असंभव तो नहीं

भीड़ के साथ में लौटा दिया जिनको तुमने
उन्हीं में पंत, निराला हो असंभव तो नहीं

□

नहीं हो सकता

व्यक्त आक्रोश नहीं हो सकता
उग्र उद्घोष नहीं हो सकता

जिसने बेचा हो स्वयं को उसके
रक्त में जोश नहीं हो सकता

पीजिये, आप भले हो जायें
दर्द मदहोश नहीं हो सकता

शेष रहती है कमी तृष्णा का
पूर्ण परितोष नहीं हो सकता

शब्द का है न बनी बात अगर
कथ्य का दोष नहीं हो सकता

ऐसे मोती हैं, ओस आँसू का
एकत्रित कोष नहीं हो सकता

लकड़बग्घा है जराथम - पेशा
एक खरगोश नहीं हो सकता

लाख षड़यंत्र करो—स्वर बाँधो
गीत खामोश नहीं हो सकता

□

लोग संतप्त मिले

लोग संतप्त मिले
प्राण अतृप्त मिले

विप्लवी अंगारे
वक्ष में सुप्त मिले

अंध आईनों में
चेहरे जप्त मिले

कमल जिनने तोड़ा
पंक में लिप्त मिले

दर्द जो मिलने थे
सभी विज्ञप्त मिले

प्यार में क्षेपक हैं
मूल संक्षिप्त मिले

सफलता के छोटे
रास्ते गुप्त मिले

देवता होकर भी
गीत अभिशप्त मिले

□

आधार नहीं था

वह सेतु ढहा जिसका आधार नहीं था
निर्माण मानकों के अनुसार नहीं था

मंतव्य पूर्ण सेतु का होता नहीं कभी
संबंध ही तटों को स्वीकार नहीं था

लागत वसूलने का था प्रश्न ही कहाँ
अतिरिक्त तोड़ने के प्रतिकार नहीं था

दायित्व-संतुलन न रहा, भार वहन को
दोनों में एक भी तो तैयार नहीं था

अपने अहम् के दुर्ग में हम कैद पड़े थे
बाहर निकाल देता वह द्वार नहीं था

कोई निदान था न कुछ विकल्प था कहीं
जो हो चुका था उसका परिहार नहीं था

गुण दोष के विवेचन से क्यों करें मना
हमको तो पूर्व में भी इनकार नहीं था

तुमने गणित किया विशुद्ध हानि लाभ का
वह प्यार प्यार ही था व्यापार नहीं था

□

आती है रोज शाम

आती है रोज शाम उदासी लिये हुए
गाती है साँस कंठ में खाँसी लिए हुए

यादों के खंडहर में भटकती है जिन्दगी
शायर की रूह साथ में प्यासी लिए हुए

अक्सर गली में मुझको खड़ी जिन्दगी मिली
यूँ ही थकी, निढाल, उबासी लिए हुए

आयेंगे अब न देवता चल प्यार लौट चल
अर्पित न हुए फूल वे बासी लिए हुए

यह रात जागकर भी कट जायगी मगर
लौटेगी साथ भोर कुहासी लिए हुए

हर एक को तय करना है यह रास्ता पैदल
सर पर है अपना बोझ प्रवासी लिए हुए

जो बाद के शिविर में बसे उन सभी के गीत
होते हैं बस बयान सियासी लिए हुए

भेजा था जिन्दगी को सुराही के वास्ते
लौटी है वो चुल्लू में जरासी लिए हुए

□

कहाँ गई

देखी थी कल जो बाग में कलियाँ कहाँ गईं
कल वाली सब रंगीन तितलियाँ कहाँ गईं

हमने बड़े ही शौक से पाली थी झील में
आश्चर्य है वे सोन मछलियाँ कहाँ गईं

जब टूट के बरसेगी तो सूखा न रहेगा
घुमड़ी थीं काली काली बदलियाँ कहाँ गईं

पहली ही बार प्यार के सहजन के पेड़ में
आयी हुई थी डाल पे फलियाँ कहाँ गईं

कल रात तम खरीद चुका क्या हथेलियाँ
सूरज को अर्घ्य देती अँजलियाँ कहाँ गईं

फूलों का बाण भेद गया है कवच सभी
तुम पूछ रहे हो कि पसलियाँ कहाँ गईं

चौड़ी हुई सड़क दिलों का फासला बढ़ा
संकरी भले थी प्यार की गलियाँ कहाँ गईं

फिरती थीं मेरे भाल के केशों में प्यार से
नाजुक सी वो किसी की उँगलियाँ कहाँ गईं

□

केवल प्रमाद में

यह सोच फिर लिखेंगे फुर्सत से बाद में
उत्तर न दे सके हम केवल प्रमाद में

तूफान आँधी पानी भीतर ही घुट गया
आँसू बगैर रोये हैं हम विषाद में

किसने सुनी अलग से वह चीख दर्द की
थी सम्मिलित हँसी के कल कल निनाद में

संदेह बुद्धि करती है, तर्क भी वही
पड़ती नहीं है श्रद्धा किसी भी विवाद में

हमने हँसी की मिसरी घोली तो बहुत थी
आँसू रहा है फिर भी खारा ही स्वाद में

कुछ गीत गज़ल पनपे खामोश होंठ पर
कितनी जवान रातें डाली हैं खाद में

अपयश, असफलताएँ, चिंता, अभाव, दुख
यह जिन्दगी से पाया अब तक प्रसाद में

□

शाम होने लगी

छाँह थी दाहिने, वाम होने लगी
देखते, देखते शाम होने लगी

बाद सूर्यास्त के पूर्ण दृश्यावली
और से और अभिराम होने लगी

जो शिखर पर अभी शेष थी रोशनी
रात के हाथ नीलाम होने लगी

यह विजन और हम तुम, हमारे लिए
ये ही बस्ती पहलगाम होने लगी

झुटपुटे के सहित जो जगी प्यास वो
शाम के साथ उद्दाम होने लगी

वो हमीं थे कि जिनके किये से यहाँ
प्रीत बदनाम, सरनाम होने लगी

एक राधा लगी वक्ष से श्याम के
श्याम के रंग में श्याम होने लगी

□

रिश्ते भुनाने लगे

स्वर, स्वरों में मिलाने लगे
लोग गुण - गान गाने लगे

रात ही रात निष्ठा बदल
लोग झण्डे रंगाने लगे

हाथ जो मुट्ठियाँ तानते
आज माला पिन्हाने लगे

जिनकी कुर्सी उलटने को थे
उनकी दरियाँ बिछाने लगे

जो न नखरे उठाते कभी
जूतियाँ तक उठाने लगे

पीठ पीछे दहाड़े कभी
सामने वे रंभाने लगे

पीठ पर मार पड़ने लगी
पेट अपना दिखाने लगे

भाव ऊँचा चढ़ा देखकर
लोग रिश्ते भुनाने लगे

□

चुप है

धरा चुप है गगन चुप है
सकल वातावरण चुप है

न जाने बात क्या है जो
किसी का मन विमन चुप है

नहीं है शब्द की ध्वनि तक
अधर का हर वचन चुप है

किन्हीं वाचाल नयनों की
दृष्टि का बांकपन चुप है

न बोली धूप की भाषा
सुबह से हो किरन चुप है

बड़ा निस्तब्ध है उपवन
कली चुप है, सुमन चुप है

न छेड़े गंध स्वर अपने
मधुर गायक पवन चुप है

खड़ी हैं सुन्न दीवारें
मौन आँगन, सदन चुप है

कोई चुप है तो मैं चुप हूँ
कलाएँ चुप, सृजन चुप है

□

कम है

दर्द कम, यातना कम है
हृदय में वेदना कम है

अधर पर गीत नव जन्में
अभी संभावना कम है

तपस्या शब्द की बाकी
अभी अभिव्यंजना कम है

चमक आयी न छंदों में
प्रखर आलोचना कम है

नहीं बजते शिराओं में
स्वरों में साधना कम है

निवेदन अनसुना अब तक
अभी भी प्रार्थना कम है

अभी आराध्य है रूठा
अभी आराधना कम है

अभी मूरत नहीं बोली
भक्ति में भावना कम है

□

बनाने लगे हैं लोग

बातें तरह तरह की बनाने लगे हैं लोग
ताने हमें तमाम सुनाने लगे हैं लोग

यह प्यार की शतरंज—हमें मात दे सकें
प्यादों को नई चाल चलाने लगे हैं लोग

हम पर बरसती खुशियों से उनको खुशी नहीं
अपने दिलों में शोक मनाने लगे हैं लोग

बनते हमारे दोस्त मगर दूसरी तरफ
खुद दुश्मनों से हाथ मिलाने लगे हैं लोग

खुद वक्त पुरस्कार हमें दे रहा मगर
आपत्तियां अनेक उठाने लगे हैं लोग

भग्नावशेष खोज हमारे अतीत के
कोई अनाम प्रेत जगाने लगे हैं लोग

विस्फोट कर सकें कभी संबंध में सहज
बारूद को दिलों में बिछाने लगे हैं लोग

प्रतिवाद या कि खंडन हम क्यों करें कि जब
अपने किये से आप ठिकाने लगे हैं लोग

□

क्यों है

बड़ी पलकें झुकी क्यों है
किसी का मन दुखी क्यों है

निरंतर अश्रु से भीगी
किसी की कंचुकी क्यों है

नयन वाचाल थे कितने
आज अन्तर्मुखी क्यों है

उदासी रूप पर अपना
नियंत्रण कर चुकी क्यों है

समर्पण के क्षणों में यह
हृदय में धुकधुकी क्यों है

किसी संदेह का बैठा
हृदय में वासुकी क्यों है

क्षमा की प्रार्थनाएँ सब
अधर पर ही रुकी क्यों है

स्वयं को देख लो रोते
मुकुर से बेरुखी क्यों है

□

घायल समझे

गीत का मर्म तो कोयल समझे
बात घायल की है घायल समझे

खुद को परहित में मिटाना सुख है
मेह के दान को बादल समझे

कितना संगीत सृजन करता है
बात घुँघुरू की है पायल समझे

किस तरह रंग लहू लाता है
फूल के रंग को कोपल समझे

जल जो ज्वाला से बना होता है
अश्रु की आँच को काजल समझे

जो सुलग के भी महक देता है
गंध का छंद है संदल समझे

रूप घूँघट का लुभाता ज्यादा
लाज का प्रश्न है आँचल समझे

जिसकी छाया में मिले हैं हम तुम
प्यार के भेद को पीपल समझे

□

खड़े हैं दोस्त

ये बरस हम पर कड़े हैं दोस्त
हम कगारों पर खड़े हैं दोस्त

युद्ध कुछ टूटी कृपाणों की
सिर्फ मूठों से लड़े हैं दोस्त

हम न धरती से उखड़ जायें
चक्रवातों में पड़े हैं दोस्त

दुश्मनों की शक्ति दुगुनी है
वे कदों में भी बड़े हैं दोस्त

गिद्ध ऊपर और दलदल में
गर्दनों तक हम गड़े हैं दोस्त

क्या पता कब गिरे आँखों से
आँसुओं जैसे जड़े हैं दोस्त

कुछ असर न होगा लोगों पर
लोग तो चिकने घड़े हैं दोस्त

देश का परिधान ? भीखों के
रेशमी कुछ चीथड़े हैं दोस्त

□

रात है, रूप है, रुबाई है

रात है, रूप है, रुबाई है
उम्र इस पल में सिमट आई है

गीले बालों से रोशनी झरती
चाँदनी दूध में नहाई है

कितने नक्षत्र जुड़े हैं आकर
कितने पुण्यों की ये कमाई है

आज होठों पे मुहर लगने दो
प्राण की प्राण से सगाई है

माँग ऐ मौत आज तू हमसे
जिन्दगी देंगे—कसम खाई है

आज की रात मिलन के सुख में
आँख दोनों की डबडबाई है

लोग लांछन लगा रहे हैं देख
ओ पवित्रता तेरी दुहाई है

कोई समझाये अब 'विराट' मुझे
प्यार में कौन सी बुराई है

□

जगाया किसने

नींद से मुझको जगाया किसने
देखना, द्वार बजाया किसने

चाँद हो कहना उसकी एवज में
दीप देहरी पे जलाया किसने

मौत हो कहना नहीं है घर पर
तुझको असमय में पठाया किसने

जिन्दगी हो यही ताना देना
आपको याद दिलाया किसने

दर्द हो कहना कहाँ थे अब तक
रास्ता घर का दिखाया किसने

यश हो कह देना कि फुर्सत से मिले
इतनी जल्दी था बुलाया किसने

रूप हो कहना कल सुबह आये
रात को मिलना—बताया किसने

गीत हो पूछना क्या बात हुई
उसको होठों से हटाया किसने

प्यार हो तो कहो भीतर आये
देख ले मुझको रुलाया किसने

□

क्या कीजिये

ये उमस घटती नहीं क्या कीजिये
रात भी कटती नहीं क्या कीजिये

सिर्फ बाती से धुआँ उठता यहाँ
ज्योति तो उठती नहीं क्या कीजिये

हम जलाये जा रहे हैं प्राण को
कालिमा छंटती नहीं क्या कीजिये

नींद आती है न जाती है व्यथा
ये जलन मिटती नहीं क्या कीजिये

कर चुके कोशिश मगर ये वेदना
गीत से बँटती नहीं क्या कीजिये

मौत से क्या कुछ न हमने कह दिया
द्वार से हटती नहीं क्या कीजिये

सच कहें तो जिन्दगी से दोस्तों
आज भी पटती नहीं क्या कीजिये

□

हावी हुआ

जिस तरह से गाँव कस्बों पर शहर हावी हुआ
आदमी पर आदमी का जानवर हावी हुआ

सो गया मन का हिरन—जागा हुआ है भेड़िया
विश्व देखे शांति पर फिर से समर हावी हुआ

आदमी में जहर भी है और अमृत भी मगर
इन दिनों विषदन्त उभरे हैं ज़हर हावी हुआ

मूल्य मानव के स्खलित पशुवृत्तियों के सामने
अब हृदय पर सिर्फ पैसों का हुनर हावी हुआ

भक्ति से होने लगी है भोग की सत्ता प्रबल
आजकल पूजाघरों पर नाचघर हावी हुआ

वह नहीं मिलता उसे जो सर्वथा उस योग्य है
श्रेष्ठताओं पर सिफारिश का असर हावी हुआ

मोड़ती संघर्ष से मुँह डालती हथियार क्यों
जिन्दगी पर मौत का अंतिम प्रहर हावी हुआ

नाव डूबेगी ? तिरेगी ? यात्रियों का प्रश्न है
केवटों पतवार पर कैसे भंवर हावी हुआ

□

धीरे धीरे

घाव भर जायगा धीरे धीरे
दुख बिसर जायगा धीरे धीरे

वक्त के पास दवा है ऐसी
विष उतर जायगा धीरे धीरे

तू बनाना तो शुरू कर बिगड़ी
सब संवर जायगा धीरे धीरे

रात ढलना है—ढलेगी—सूरज
फिर उभर जायगा धीरे धीरे

तू जो सुधरे तो भाग्य भी तेरा
खुद सुधर जायगा धीरे धीरे

बूँद ही बूँद रस झरे दिल में
पात्र भर जायगा धीरे धीरे

अश्रु से धोता रहा दर्पण तो
वह निखर जायगा धीरे धीरे

कोई पत्थर हो असर निश्चित ही
प्यार कर जायगा धीरे धीरे

□

लगा रक्खी है

धूम नफरत ने मचा रक्खी है
आग बस्ती में लगा रक्खी है

धर्म के नाम पे कौमी हिंसा
अक्ल इंसा ने गंवा रक्खी है

मौत हिन्दू न मुसलमाँ समझे
भूख लाशों की बढ़ा रक्खी है

खिड़कियाँ बन्द हैं सड़कें सूनी
जिन्दगी कैद बना रक्खी है

खौफ इतना न झपकतीं पलकें
नींद आँखों से उड़ा रक्खी है

अब न बतियाते गली में छज्जे
साँकलें सबने चढ़ा रक्खी है

बात करते हैं न मंदिर मसजिद
दोस्ती अपनी भुला रक्खी है

□

बेकार युवक की ग़ज़ल

गर इजाजत हो तो आऊँ साहब
डिग्रियाँ अपनी बताऊँ साहब

आप रोजी से लगा दें, अहसाँ
उम्र भर मैं न भुलाऊँ साहब

क्लर्क का स्थान न हो भृत्य करें
कुछ तो मैं बन के दिखाऊँ साहब

बूढ़े माँ बाप यही कहते हैं
पढ़ गया हूँ तो कमाऊँ साहब

रोटियाँ तोड़ता हूँ फोकट में
आप अपने पे लजाऊँ साहब

फिरता रहता हूँ मैं दफ्तर दफ्तर
घर में आवारा कहाऊँ साहब

मेरा भोपाल में कोई भी नहीं
फोन मैं किससे कराऊँ साहब

रोजी मिल जाय तो कुछ बरसों में
ब्याह वहना का रचाऊँ साहब

सोचता हूँ कभी डाका डालूँ
आग कस्बे में लगाऊँ साहब

बोझ अपनी ही लाश का आखिर
कब तलक और उठाऊँ साहब

यह भी संभव कि किसी दिन हारूँ
खुद को क्षिप्रा में डुबाऊँ साहब

□

बम्बई

बस दूर दूर ही से लुभाती है बम्बई
लेकिन न कभी पास बुलाती है बम्बई

इस बार बुलाया तो चले आये हैं लेकिन
पहचान तक न हमसे जताती है बम्बई

इस बार अपनी आँख से देखी हकीकतें
फिल्मों में कितना झूठ दिखाती है बम्बई

बैकुंठ भी यहीं पे है, रौरव नरक यहीं
कितने तरह के स्वांग रचाती है बम्बई

कुछ देवता बसे हैं ताज, ओबेराय में
कीड़ों को झुग्गियों में बसाती है बम्बई

हीरों का हार पहन के सागर से रोज शाम
रानी की तरह शीश उठाती है बम्बई

अरबों, विदेशियों को किया करती है सलाम
देशी का तो मजाक उड़ाती है बम्बई

मुजरों की, कैबरों की जुड़ाती हैं महफिलें
रुपयों से रोज जश्न मनाती है बम्बई

काले धनों के जो कुबेर उनके वास्ते
अय्याशियों के साज जुटाती है बम्बई

दूकान ही दूकान है हर चीज बिकाऊ
इंसान को भी ज़िन्स बनाती है बम्बई

बिक्री के लिए जिन्दा औरत के गोश्त की
बेशर्म नुमाईश सी लगाती है बम्बई

जंगल है भीड़ का इसी में भेड़िये भी हैं
भोले हिरन शिकार फँसाती है बम्बई

फिल्मों के द्वार बलि को कच्ची जवानियाँ
रेलों से थोक भाव मँगाती है बम्बई

परदे पे चमकने को जो भागा है घरों से
उस रूप को कोठे पे बिठाती है बम्बई

रेशम पे सोने वाले थे जो उनके वास्ते
फुटपाथ पे अख़बार बिछाती है बम्बई

परदे का बादशाह था वो चाल में मरा
कईयों को कफन तक न उढ़ाती है बम्बई

व्यापार की मण्डी है कला बेच दी गई
बढ़ बढ़ के खुद ही दाम लगाती है बम्बई

वैसे तो है मगरूर मगर अपने शीश को
दौलत की ठोकरों पे झुकाती है बम्बई

जल थल की राह से तो कभी नभ के मार्ग से
खुद तस्करों से हाथ मिलाती है बम्बई

अट्टालिका के ठीक सामने हैं झुग्गियाँ
नेता को कितने व्यंग्य सुनाती है बम्बई

बदबू को दाब रखती है ये सेंट लगाकर
कपड़ों के नीचे कोढ़ छिपाती है बम्बई

जो दिख रहा है जैसा वैसा नहीं है वो
चेहरे पे कई चेहरे चढ़ाती है बम्बई

सट्टा, जुआँ या रेस में दो चार को बना
लाखों बने हुओं को मिटाती है बम्बई

देशी विदेशी कारों का अविराम काफिला
पानी सा पेट्रोल जलाती है बम्बई

अंटी में जिसके नोट उसे प्यार करेगी
कड़का हुआ तो ठेंगा दिखाती है बम्बई

सामान की तरह ठुंसे हैं खोलियों में लोग
इन्सान कबूतर से जिलाती है बम्बई

यह दौड़ भाग व्यस्तता सुबह से शाम तक
पड़ोसियों को तक न मिलाती है बम्बई

जाते हैं बड़ी भोर तो आते हैं देर रात
बच्चों से भी न बात कराती है बम्बई

खाना तो फिर भी सस्ता सुलभ है यहाँ
मगर रहने को आसमान बताती है बम्बई

पहले तो टैक्सियों में घुमाती है बाद में
लोकल में बेटिकिट भी चढ़ाती है बम्बई

देती है डिनर शौक से सेन्टूर में कभी
भूखा भी कई बार सुलाती है बम्बई

चौपाटी या जुहू पे हँसा ले भले मगर
खोली के अकेले में रूलाती है बम्बई

जूठन तो बहुत दूर है घूड़ों से बीनकर
पेटों की अपनी आग बुझाती है बम्बई

अस्तित्व का सवाल यहाँ पेट के लिए
क्या क्या न आदमी से कराती है बम्बई

वह पास से तटस्थ गुजर जायेगी मगर
दुख दर्द कब किसी का बँटाती है बम्बई

रुकता है उसको फेंकती है रास्तों से दूर
खुद भागती है और भगाती है बम्बई

तुझको सलाम है मेरा लानत हजार बार
खुद नाचती है और नचाती है बम्बई

□ □